International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
ISSN -2393-8048, July-December 2021, Submitted in October 2021, iajesm2014@gmail.com

संयुक्त प्रान्त में क्रान्तिकारी आन्दोलन और महिलाएँ (1905-1932)

Pushpalata, Research Scholar SunRise University, Alwar
Dr. Rajeev Kumar Jain, Professor, Dept. of History, SunRise University, Alwar, Rajasthan, India.

सार

भारत में ब्रिटिश राज 1757 में प्लासी के युद्ध के फलस्वरूप स्थापित हुआ। इस युद्ध के 15-16 वर्षों बाद ही बंगाल प्रान्तभंयकर दुर्भिक्ष का शिकार हुआ जिसमें लगभग 10 लाख लोगों की असमय मौत हो गई। ऐसे अकालों से सम्बन्धित 'फेमिन कमीशन रिपोर्ट्स' के अनुसार 1770 से 1880 के मध्य भारत को 18 बड़ेदुर्भिक्षों का सामना करना पड़ा जिसमें लाखों लोग काल के गाल में समा गए। वस्तुतः भारत का आर्थिक शोषण ब्रिटिश औपनिवेशिकसरकार की नीति का एक अहम् लक्ष्य था। इन शोषणकारी नीतियोंके अन्तर्गत भारतीय कृषि और उद्योग धन्धों की सिर्फ उपेक्षा कीगई, अपितु उन्हें योजनाबद्ध ढंग से नष्ट कर दिया गया। निरन्तरपड़ने वाले अकाल इन्हीं नीतियों का परिणाम थें । इस लेख में संयुक्त प्रान्त में क्रान्तिकारी आन्दोलन और महिलाओं का अध्ययन किया गया है।

कीवर्डः संयुक्त प्रान्त, क्रान्तिकारी आन्दोलन, महिला

संयुक्त प्रान्त में क्रान्तिकारी आन्दोलन

आजादी की लड़ाई के उस काल मेंजबसरकारीस्कूल-कालेजों का बहिष्कार कर सैंकड़ों हजारों छात्र-छात्राएँ अपनीपढाई छोड़ बाहर आ गए थें तो देशभक्त परिवारों के ये विद्यार्थीराष्ट्रीय विद्यालयों और महाविद्यालयों में पढ़ने भेजे गए थे। इसतरह की शिक्षण संस्थाओं में लाहौर नेशनल कालेज,अहमदाबाद का गुजरात विद्यापीठ, कलकता का नेशनल कालेज,जालन्धर का कन्या महाविद्यालय और बनारस का काशी विद्यापीठ प्रमुख थे, जहां देश के कोने-कोने से आकर छात्र शिक्षा प्राप्त करते थे। देश को आजाद कराने के लिए चलें तमाम आन्दोलनोंमें इन संस्थाओं के छात्रों एवं अध्यापकों की अग्रणी भूमिका रहीं।कहने की आवश्यकता नहीं है कि जिस तरह लाहौर के नेशनलकालेज ने पंजाब के क्रान्तिकारी आन्दोलन की जमीन तैयार की,उसी तरह संयुक्त प्रान्त के नवयुवकों में क्रान्तिकारी चेतना उत्पन्नकरने में काशी विद्यापीठ का विशेष योगदान रहा। चन्द्रशेखरआजाद जैसे प्रमुख क्रान्तिकारी इसी विद्यापीठ से निकले थे। काशीविद्यापीठ के कई प्रसिद्ध अध्यापकों जिनमेंभगवान दास, आचार्यनरेन्द्र देव, योगेश बाबू, श्री प्रकाश आदि शामिल थें, ने अपनेछात्रों में क्रान्तिकारी चेतना को फलीभूत किया। उन्हीं के प्रयासोंसे संयुक्त प्रान्त में क्रान्तिकारी दल को संगठित किया गया।

1914 के गदर आन्दोलन के बाद भारत में पहली बार स्पष्टवैचारिक धरातल के आधार पर राजनीतिक क्रान्ति के विचार काआविर्भाव हुआ था। इस आन्दोलन में साम्राज्यवाद-विरोधी क्रान्तिकी परम्परा से जुड़े रहने के लिए 1857 की क्रान्ति के दौरानप्रयुक्त शब्द 'गदर' को अपनाया गया और अपनी इसी नाम से 'गदर पार्टी' की स्थापना की गई। यह आन्दोलन सही मायनों में पूरी तरह उपनिवेशवाद-विरोधी तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन था। इसआन्दोलन के सूत्रधारों में बंगाल के महान क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल भी एक थे। गदर विद्रोह में उनकी भूमिका के कारणउन्हें 'बनारस षडयन्त्र केस' में आजीवन कारावास की सजा दी गई थी। किन्तु बाद में ब्रिटिश राज द्वारा की गई आम माफी के बादफरवरी 1920 में वे जेल से रिहा कर दिये गए। जेल से रिहाहोने के बाद उन्होंने कुछ दिन जमशेदपुर के मजदूर आन्दोलन मेंकाम किया परन्तु सन् 1921 में उन्होंने संयुक्त प्रान्त को अपनीकर्मभूमि बना लिया और इलाहाबाद चले आए। उन्होंने अपनीआत्मकथा 'बन्दी जीवन' में लिखा:

''जिस समय मैं जमशेदपुर में मजदूर संगठन का कार्यकर रहा था... मेरे लिए यह परम सौभाग्य की बातथी कि उत्तर भारत में विप्लव कार्य करने के लिएकई धनी व्यक्ति मुझे नियमित रूप से सहायता देते रहे। इसके बाद मैंने क्रान्तिकारी दल को संगठितकरने हेतु संयुक्त प्रान्त में कई जिलों का भ्रमणकिया। सौभाग्य में मेरी भेंट मैनपुरी के एक नेता देवनारायण भारती से हुई। इसके बाद.... बनारस मेंमेरी मुलाकात सुरेशचन्द्र भट्टाचार्य, सुरेन्द्रनाथ मुखर्जीऔर राजेन्द्र लाहिड़ी से हुई।.... एक मित्र के सहयोगसे मैं मेरठ में विष्णु शरण दुबलिस से मिला। विष्णुशरण की मदद से महावीर त्यागी और उनके

सहयोगशाहजहाँपुर मेंप्रसाद बिस्मिलसेऔरअसफाकउल्ला से भेंट हुई। इस तरह 1922 के अन्ततक 8 जिलों में मेरा काम फैल चुका था।''

जाहिर है, सान्याल ने जिस वक्त संयुक्त प्रान्त को अपनीकर्मभूमि अपनाया था, उस वक्त तक प्रान्त में क्रान्तिकारी आन्दोलनस्वतन्त्र रूप से विकसित होने लगा था। जैसा कि पहले बतायाजा चुका है, 1915 के बाद संयुक्त प्रान्त में एक ऐसी पार्टी काउदय हुआ जिसका प्रान्त के बाहर किसी भी पार्टी से कोई सम्बन्ध न था। इसका नाम 'मातृवेदी समिति' था जो कि एक भूमिगत गुप्त संस्था थी। यह संस्था बाल गंगाधर तिलक के विचारों सेप्रेरित थी तथा एक स्थानीय नेता गेंदा लाल दीक्षित के नेतृत्व में कार्य कर रही थी। दीक्षित शिवाजी की छापेमार युद्ध रणनीति सेदेश में साम्राज्यवाद के विरूद्ध क्रान्ति करना चाहते थे। वे मूलतःआर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित थे। इस संस्था कीबाकायदा एक लिखित नियमावली और एक लिखित प्रतिज्ञा-पत्र था।मातृ समिति ने एक क्रान्तिकारी पर्चा निकाला था जो संयुक्त प्रान्तके अनेक जिलों में बाँटा गया था। इस खुफिया सोसायटी कीशाखाएँ उत्तर भारत के कई प्रमुख नगरों में फैल चुकी थी। इसने 'अमेरिका का स्वतंत्रता संग्राम' नाम की एक पुस्तक का भीप्रकाशन किया था। यह पुस्तक 1916 में लखनऊ में हुए कांग्रेस अधिवेशन में बेची गई थी। बाद में यू०पी० सरकार ने यद्यपि इसेजब्त कर लिया था तो भी क्रान्तिकारियों ने बाद में दिल्ली कांग्रेसअधिवेशण में भी इसे वितरित किया था।

तालिका 1: मैनपुरी षडयन्त्र केस के सजायाफ्ता क्रान्तिकारी

अभियुक्त का नाम	पिता का नाम	जिला	सजा
दम्भी लाल	भिखारी दास	अलीपुर	7 वर्ष
गोपीनाथ	तारा शंकर	जसराना	7 वर्ष
सिद्ध गोपाल अध्यापक	गब्बर सिंह	चांदी	5 वर्ष
प्रभाकर	छक्कन लाल	अलीपुर	5 वर्ष
चन्द्रधर	मेवा राम	मैनपुरी	5 वर्ष
शिवचरण लाल	गंगा राम	एटा	5 वर्ष
फतेह सिंह	शंकर सिंह	कानपुर	5 वर्ष
राजा राम	मुरलीधर	दयोकली	3 वर्ष
मुकन्दी	घासी राम	इटावा	3 वर्ष
किरोड़ी लाल	जामन लाल	बेवाड़	3 वर्ष

तालिका 2: काकोरी षड्यन्त्र केस में सजायाफ्ता क्रान्तिकारियों की सूची

अभियुक्त का नाम	पिता का नाम	आयु (वर्ष)	निवास स्थान	सजा
राम प्रसाद बिस्मिल	मुरलीधर	28	शाहजहांपुर	फांसी
राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी	रिबती मोहन लाहिड़ी	24	बनारस	फांसी
रोशन सिंह	जंगी सिंह	36	शाहजंहापुर	फांसी
जोगेश चन्द्र चटर्जी	बिपिन चन्द्र चटर्जी	30	ढाका	10 वर्ष का कारावास
सुरेन्द्र चन्द्र भट्टाचार्य	ईश्वर चन्द्र भट्टाचार्य	28	कानपुर	7 वर्ष का कारावास
विष्णु शरण दुबलिश	शंकर लाल	26	मेरठ	7 वर्ष का कारावास
मन्मथ नाथ गुप्त	बिरेश्वर गुप्त	19	बनारस	14 वर्ष का कारावास
गोबिन्द चरण	डी०एन० चैधरी	30	ढाका	10 वर्ष का कारावास
मुकुन्दी लाल	घासी राम	33	इटावा	10 वर्ष का कारावास
रामकृष्ण खत्री	श्योलाल खत्री	22	चादा	10 वर्ष का कारावास
प्रेम कृष्ण खन्ना	राम किशन खन्ना	26	शहजहांपुर	5 वर्ष का कारावास

संयुक्त प्रान्त में क्रान्तिकारी आन्दोलन: महिलाओंकी भूमिका

- **शास्त्री देवी:**

शास्त्री देवी रामप्रसाद बिस्मिल की छोटी बहन थी। उनकाजन्म 1901में हुआ था। यद्यपि कठोर रूढ़िवादी सामाजिकव्यवस्था के उस युग में उनके खानदान में लड़कियों को जन्म लेतेही मार दिया जाता था, किन्तु उनकी माँ तथा बड़े भाई बिस्मिलके कारण उनके प्राणों की रक्षा हुई थी। वे इस कारण जन्म से भाई के काफी करीब थी। इसी कारण वे क्रान्तिकारीआन्दोलन से भी जाने-अनजाने जुड़ती गई। इस बारे में अपनेबचपन के दिनों का स्मरण करते हुए शास्त्री देवी ने एक जगह लिखा हैं:

‘‘मेरे भाई को स्त्री समाज से बहुत प्रेम था।उन्होंने मुझे बराबर साथ-साथ संध्या व हवन करनासिखाया। वे क्रान्तिकारियों के साथ चले जाते थे और मुझे कह जाते थे कि किसी को कुछ न कहना।मैं भाई के डर से किसी कोकुछ नहीं बताती थी।’’

- **श्रीदेवी मुसद्दी**

संयुक्त प्रान्त की एक और क्रान्तिकारी महिला श्रीदेवी मुसद्दीको क्रान्तिकारी चन्द्रशेखर आजाद को पुलिस के शिकंजे से बचानेमें उनकी सूझ-बूझ एवं कुशलता के कारण याद किया जाता है। वेइलाहाबाद के श्री रामचंद्र मुसद्धी की धर्मपत्नी थी। वे एकमारवाड़ी परिवार की कन्या थीं और मारवाड़ी परिवार में ही ब्याही गई थी। उनके पति रामचंद्र मुसद्धी क्रान्तिकारियों से सहानुभूति ही नहीं रखते थे, अपितु समय-समय पर उनकी आर्थिक सहायता भी करते थे। सन् 1930 में एक दिन संयोग से रक्षाबन्धन का दिन था। मुसद्धी के घर में पूरे परिवार और आस-पड़ोस की महिलाएं भी आयी हुई थी। उस समय पुलिस की नजरों से बचने के लिएचन्द्रशेखर आजाद इलाहाबाद में कटरा जाते समय कुछ वक्त उनके घर में छिपे थे। बाहर के लोगों द्वारा उन्हें तलाशी के लिएपुलिस के आगमन की सूचना मिली। पुलिस द्वारा घर कीघेरा-बन्दी कर ली गई जिससे घर में खलखली मच गई। उससमय कुशाग्र बुद्धि से सम्पन्न श्रीदेवी ने आजाद को नौकर केकपड़े पहनाये, एक परात में मिठाई आदि कुछ सामान रखा औरजैसे ही पुलिस ने घर में प्रवेश किया, आजाद को डांटते हुयेकहा, ‘‘जानता नहीं, आज रक्षा बन्धन है। मुझे भाई के घर जाने में देर हो रही है। जल्दी से यह परात उठा और चल।’’ तत्पश्चात् उन्होंने दरोगा साहब से हंसकर कहा, ‘‘आज सलूनों है। मैं भैया के यहां जा रही थी। पर आज पहली राखी आपको हीबाधूंगी।’’ दरोगा साहब को राखी बांधी गई और चार लड्डू उनके रूमाल में भी बांध दिये गये। इस तरह आजाद अपनी नकली ‘मालकिन’ के साथ पुलिस की नजरों से बचकर सुरक्षित निकलगए। श्रीमती मुसद्धी ने यह सब कुछ इतने स्वाभाविक और सहजढंग से किया कि पुलिस को जरा भी संदेह नहीं हुआ और बिनाशिनाख्त का अवसर दिये वे आजाद को घर से निकाल ले गयी।पुलिस अफसर यह सोच भी नहीं सकें कि इतना तेजस्वी क्रान्तिकारीएक नौकर के रूप में उन्हें धोखा देकर निकल जायेगा। बाद मेंतलाशी में कुछ नहीं मिला और पुलिस खाली हाथ मलते लौटगयी।

- **मुकन्द मालवीय**

श्रीमती मुकन्द मालवीय संयुक्त प्रान्त के प्रसिद्ध राजनैतिककेन्द्र इलाहबाद की रहने वाली थीं। वे राष्ट्रवावी नेता मदन मोहनमालवीय की पुत्रवधु थी। वे क्रान्तिकारियों की सहायता करने केसाथ-साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की गतिविधियों में भी भाग लेती थी। 1932 में पुलिस ने इलाहाबाद में सार्वजनिक भाषण देनेएवं बैठकें करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। किन्तु मुकन्द ने 1932 में इलाहाबाद में घंटाघर के पास एक जनसभा आयोजित कीजिसमें उन्होंने क्रान्तिकारी भगत सिंह और उनके साथियों को फांसीदिये जाने के विरोध में जोरदार भाषण दिया।इस भाषण मेंउन्होंने भगत सिंह और उसके साथियों को फांसी दिये जाने केविरोध में ब्रिटिश सरकार की कड़ी आलोचना की और साथ हीमहिलाओं को ब्रिटिश राज के खिलाफ एकजुट होकर लड़ने का आह्वान किया।

- **मृणालिनी देवी**

संयुक्त प्रान्त में बनारस की रहने वाली श्रीमती मृणालिनी देवीने भी अपने पति श्री सुविमल राय की प्रेरणा से क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया था। राय क्रान्तिकारियों से सहानुभूति रखते थे। वे भगत सिंह,

बटुकेश्वर दत्त तथा चन्द्रशेखर आजाद के काफी करीब थे तथा समय-समय पर क्रान्तिकारियों की सहायता करते थे। यहां तक कि कई बार क्रान्तिकारी पुलिस से बचने केलिए उनके घर में शरण लेते थे। क्रान्तिकारियों द्वारा उनके घरमें अस्त्र-शस्त्र और रिवाल्वर भी छिपाकर रखे जाते थे।मृणालिनी देवी घर आए मेहमान क्रान्तिकारियों की पूरी आत्मियता से सेवा करती थी। उन्होंने कई बार गोला-बारूद औरअस्त्र-शस्त्रों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने का भीकार्य किया। अनेक बार एक मारवाड़ी स्त्री के भेष में उन्होंनेअस्त्र-शस्त्रों को अपने भारी भरकम कपड़ों में छिपाकर पुलिस कीआंखों में धूल झोंककर मेरठ, कानपुर, सहारनपुर तथा बरेली मेंगन्तव्य स्थानों तक पहुंचाया था।

- **सुनीति देवी**

संयुक्त प्रान्त की क्रान्तिकारी महिलाओं में सुनीति देवी भी शामिल थी जोकि कानपुर से सम्बन्धित थी। उनकी क्रान्तिकारीआन्दोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही थी। दरअसल उन्होंने कानपुरमें क्रान्तिकारी आन्दोलन को संगठित करने में चन्द्रशेखर आजाद की काफी सहायता की थी। इस कारण आन्दोलन में आजाद केसहायक की भूमिका के रूप में उनका योगदान स्मरणीय माना जाता है। वे कानपुर में क्रान्तिकारी दल की सक्रिय सदस्या भी थी।दल में उनकी मुख्य भूमिका क्रान्तिकारियों के कागज-पत्र एवं अस्त्र-शस्त्र एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाने की थी। साथ हीउन्होंने शस्त्र छिपाने एवं क्रान्तिकारियों के लिए अस्त्र-शस्त्र मुहैयाकराने आ कार्य भी बड़ी बखूबी और सर्तकता से किये। इनकार्यों को अंजाम देते समय पुलिस को उन पर काफी समय तककोई शक नहीं हुआ और न ही इस बारे में किसी को कानों-कानकोई खबर हुई।

उपसंहार

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि हमारे अध्ययनकाल मेंसंयुक्त प्रान्त की अनेकों महिलाओं ने क्रान्तिकारी आन्दोलन में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहां भी उन्होंने पंजाब की महिलाओंकी तरह प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से तमाम क्रान्तिकारी गतिविधियों मेंअपना योगदान दिया। यहां भी महिलाओं की भूमिका यद्यपिअधिकतर मामलों में सहायक की रही। परन्तु इसे जरा भी कमकरके नहीं देखा जाना चाहिए क्योंकि उनका कार्य दोहरा था।जहाँ एक तरफ वे परम्परागत घरेलू कार्यभार उठातेक्रान्तिकारियों की सेवा-श्रूषा करती थी, वहीं दूसरी तरफ उनकीतमाम योजनाओं को सफलतापूर्वक अंजाम देने में भी अपना अहम योगदान देती थी और मौका मिलने पर वे स्वयं भी मोर्चा सम्भाल लेती थी। देश के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए औरकोई भी कीमत चुकाने के लिए तत्पर रहती थी। सुनीति देवी एवंमाया देवी जैसी महिलाओं के उदाहरण इस बात को साबित करते है। यद्यपि प्रान्त में क्रान्तिकारी आन्दोलन में योगदान देने वालीमहिलाओं के जीवन एवं गतिविधियों के विषय में अधिक दस्तावेजीजानकारियां नहीं मिलती, किन्तु सीमित मात्रा में उपलब्ध जानकारियोंके आधार पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि यहां परक्रान्तिकारी आन्दोलन में उभर कर आए लगभग सभी नायकों कीठोस सहायता परदे के पीछे रहकर गुप्त रूप से ये क्रान्तिकारीमहिलाएं निरन्तर करती रहीं और इस तरह उन्होंने राष्ट्रीय मुक्तिसंग्राम में अपना अमूल्य योगदान दिया।

संदर्भ

सक्सेना, शंकर सहाय, क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, ग्रन्थविकास प्रकाशन, जयपुर, 2010.
सक्सेना, बलबीर, भारत की क्रान्तिकारी महिलाएं, नई दिल्ली,2007.
शर्मा, श्रीप्रकाश, आधी आबादी का संघर्ष, राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली, 1956.
शर्मा, मालती, स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ, शिवांक प्रकाशन,नई दिल्ली, 2011.
शर्मा, नरेश कुमार, स्वतंत्रता संग्राम की भारतीय वीरांगनाएं, अनुप्रकाशन, नई दिल्ली, 2000.
वड़ैच मलविंदर सिंह, भगत सिंहः अमर विद्रोही, प्रकाशनविभाग, नई दिल्ली, 2013.
वडैच मलविंदर सिंह व सिधु, गुरुदेव सिंह, दि हैंगिग ऑफ भगतसिंह, यूनिस्टार, पब्लिशर्स, चंडीगढ़, 2000.
मिश्र, शिव कुमार, गदर पार्टी से भगत सिंह तक, लोक प्रकाशनगृह, दिल्ली, 2014.
मालवीय, कपिलदेव, ओपन रिवोल्यूसन इन दिन पंजाब, इलाहाबाद,1984.